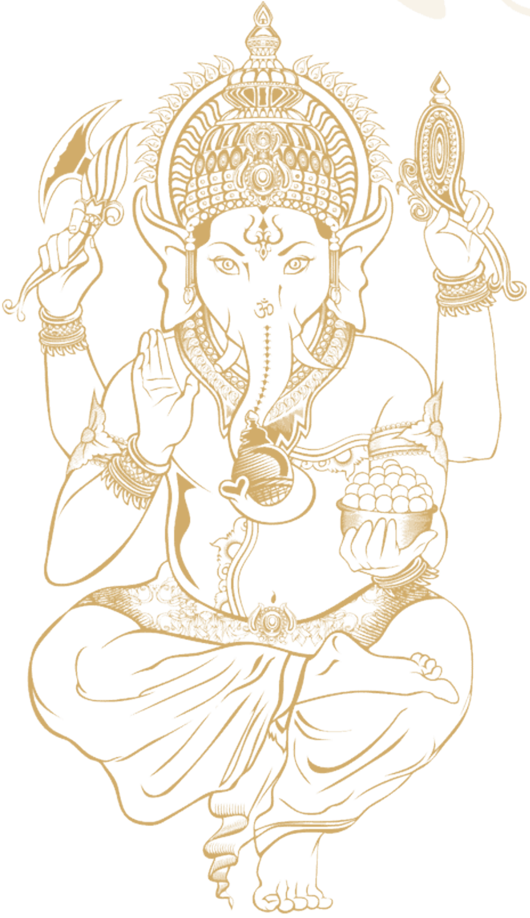

???????

05 Jun 2019

10:29 PM

Hanumangarh

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121900601

तिथि 05/06/2019 **समय** 22:29:10 **वार** बुधवार **स्थान** Hanumangarh **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:07:25
अक्षांश 29:33:00 उत्तर **रेखांश** 74:21:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:32:36 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	14:51:54 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:01:34 घं	योनि	मार्जार
सूर्योदय	05:32:35 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	19:29:38 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2076	वश्य	मानव
शक संवत	1941	वर्ग	मार्जार
मास	ज्येष्ठ	युँजा	मध्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	वायु
तिथि	3	जन्म नामाक्षर	के-केसरी
नक्षत्र	पुनर्वसु	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
योग	गण्ड	होरा	शनि
करण	तैतिल	चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी
गुरु 15वर्ष 7मा 1दि
गुरु
05/06/2019
05/01/2035

गुरु	23/02/2021
शनि	06/09/2023
बुध	12/12/2025
केतु	18/11/2026
शुक्र	19/07/2029
सूर्य	07/05/2030
चन्द्र	06/09/2031
मंगल	12/08/2032
राहु	05/01/2035

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 11मा 11दि
भ्रामरी
17/05/2024
17/05/2028

भ्रामरी	26/10/2024
भद्रिका	17/05/2025
उल्का	16/01/2026
सिद्धा	27/10/2026
संकटा	16/09/2027
मंगला	27/10/2027
पिंगला	16/01/2028
धान्या	17/05/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:32:08	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	---	0:00			
सूर्य			20:37:56	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि	1.34	भ्रातृ	पितृ	वध
चंद्र			20:20:41	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि	1.25	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			19:06:52	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	चंद्र	शत्रु राशि	1.02	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			07:29:00	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	स्वराशि	1.18	ज्ञाति	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		25:59:01	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	मित्र राशि	0.84	आत्मा	धन	विपत
शुक्र			01:47:01	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	स्वराशि	1.34	कलत्र	कलत्र	साधक
शनि	व		25:21:42	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	सम राशि	1.15	अमात्य	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		23:45:09	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	उच्च राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		23:45:09	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	शनि	उच्च राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

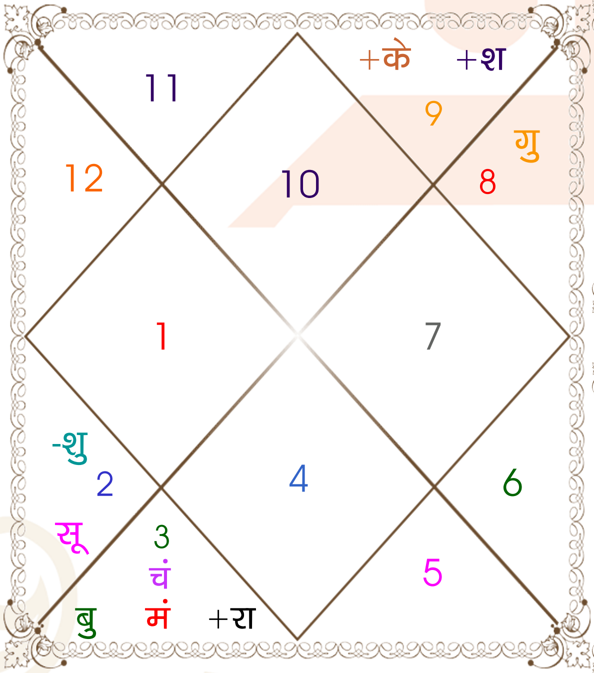

चन्द्र कुंडली

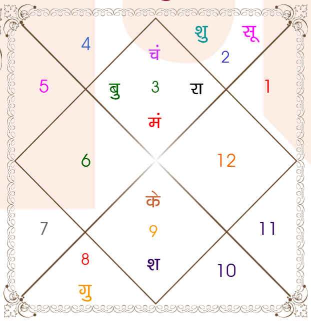

नवमांश कुंडली

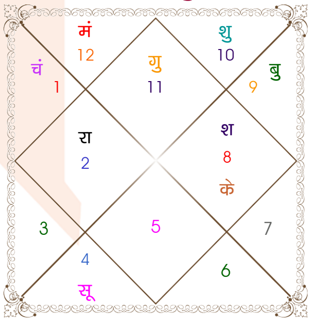

सर्वाष्टकवर्ग

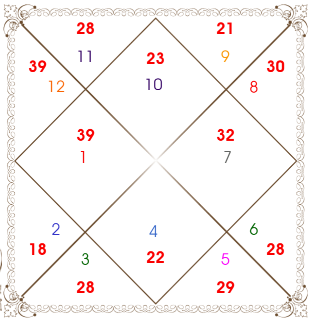

दशमांश कुंडली

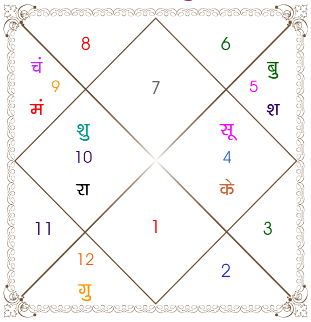

FUTUREPOINT Astro Solutions
एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

नक्षत्रफल

आप पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मार्जार, वर्ण शूद्र, नाड़ी आद्य, गण देव तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "के" होगा।

आप अत्यन्त ही शान्त स्वभाव की होंगी तथा संकट या क्लेश के समय में भी धैर्य धारण करके रखेंगी। किसी भी प्रकार की घबराहट या उतावलेपन का प्रदर्शन नहीं करेंगी। आप अपने जीवन को सुखपूर्वक बिताएंगी तथा समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों की आपको प्राप्ति होगी। शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर तथा गौरवर्ण की महिला होंगी तथा सौभाग्य से हमेशा युक्त रहेंगी। समाज में आप खूब लोकप्रिय रहेंगी तथा समाज के सभी वर्गो की भलाई के कार्यो में हमेशा तन मन धन से तत्पर रहेंगी। आप जीवन में पुत्र तथा मित्रों से भी हमेशा युक्त रहेंगी।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त तथा सुशील स्वभाव वाली होंगी। यदा कदा आपकी बुद्धि में दुष्टता के भाव भी उत्पन्न होंगे जिससे आपकी प्रवृति भी दुष्कर्मो की ओर अग्रसर होगी। आप हमेशा अपने को अतृप्त सा अनुभव करेंगी जिससे तृष्णाओं की पूर्ति के लिए आप व्याकुल रहेंगी। परन्तु सन्तोषी प्रवृति होने के कारण आप अल्प प्राप्ति में ही परम सन्तुष्टि का अनुभव करेंगी।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

आप ज्ञानी होंगी तथा आपकी आत्मा भी ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित रहेगी एवं कठिन से कठिन विषयों का भी आपको ज्ञान रहेगा। आप अपने धनैश्वर्य तथा शारीरिक बल से समाज में कीर्ति को प्राप्त करेंगी। लेखन कार्य में आपकी प्रारम्भ से ही रूचि रहेंगी तथा कविता लेखन में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

मित्रों की संख्या आपकी अधिक मात्रा में रहेगी तथा शास्त्रों के अध्ययन में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा शास्त्रज्ञान प्राप्त करने के लिए आप इनका निरन्तर अभ्यास करेंगी। आप रत्न तथा स्वर्णादि से निर्मित आभूषणों से भी युक्त रहेंगी। इसके साथ ही आपकी प्रवृति भी दानशील रहेगी तथा आप बहुत से द्रव्यों एवं भूमि आदि से सम्पन्न रहेंगी।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी आँखें श्याम वर्ण की होंगी तथा सिर के बाल भी घुंघराले होंगे। आपके शरीर के समस्त अंग पुष्ट एवं स्वस्थ होंगे तथा नासिका ऊंची होगी। आप नाना प्रकार के शास्त्रों का अध्ययन करेंगी तथा परिश्रमपूर्वक उनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। सन्देशों का आदान प्रदान या दूतिका कार्य में आप प्रवीणता प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि कुशाग्र होगी तथा इसी कुशाग्रता के फलस्वरूप आप अन्य व्यक्तियों की हृदय की बातों को जानने में सफलता प्राप्त करेंगी। सामाजिक जनों से आपका व्यवहार मृदु एवं विनयशील रहेगा जिस से अन्य लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। आपकी वाणी भी अत्यन्त श्रेष्ठ एवं मधुर होगी जिसे सुनकर श्रोता हर्षित होंगे। हंसने तथा हंसाने के कार्य में भी आप अत्यन्त चतुर होंगी।

संगीत तथा नृत्य के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा इनका विशद ज्ञान भी आप प्राप्त करेंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके हाथ में मत्स्याकार का चिन्ह हो सकता हैं। आपकी नसें शरीर के भी बाहर से दृष्टिगोचर होंगी तथा शरीर की लम्बाई भी पर्याप्त होगी आपका सौन्दर्य लावण्यता से परिपूर्ण तथा दर्शनीय होगा। काव्य लेखन के प्रति आपकी अभिरूचि होगी तथा काव्य सृजन में भी आप सफलता प्राप्त करेंगी। आप आजीवन समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगी। परन्तु आपका अधिकांश समय विषय वासनाओं के सुख में लिप्त रहकर व्यतीत होगा। सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी। आप पुरूष वर्ग को वश में करने में भी पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आजीवन हँसने हँसाने को प्रिय कार्य समझेंगी। यात्रा या भ्रमण करना आपको अच्छा लगेगा तथा घर के अन्दर रहकर भी शान्ति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

दीर्धायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपके सामाजिक संबंध अत्यन्त विस्तृत रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गों में आप जानी जायेंगी तथा उनके मध्य लोकप्रिय भी रहेंगी। पुरूष वर्ग के प्रति आपका अधिक आकर्षण रहेगा तथा पुरूष समाज की प्रिय एवं आदरणीय सदस्या होंगी। आप अपनी योग्यता तथा सज्जनता से सम्मान तथा गौरव को अर्जित करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपनी भाषा तथा लेखन में श्लिष्ट युत स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करेंगी जिससे सामान्यजन भी समझने में सफल होंगे। आप अपने परिजनों अर्थात् बन्धु बान्धव व संबंधियों

तथा अन्य सामाजिक जनों की भलाई के लिए हमेशा कार्य करने में व्यस्त रहेगी। आप पित्त कफ मिश्रित प्रकृति से युक्त तथा अपने आचरण से श्रेष्ठ रहेंगी।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी आँखें हमेशा चंचल रहेंगी। नृत्य तथा संगीत से आपका विशेष लगाव रहेगा तथा अपने सद्व्यवहार तथा सत्कर्म एवं धनैश्वर्य से यश की प्राप्ति करेंगी। आप एक दृढ़निश्चयी महिला होंगी तथा जिसका संकल्प एक बार मन में ले लेंगी उसे परिश्रमपूर्वक पूर्ण करके ही छोड़ेंगी। साथ ही आप न्यायवादी भी होंगी तथा भाषण देने की कला में भी आप प्रवीण होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप देवगण में पैदा हुई हैं अतः आप श्रेष्ठ वाणी से युक्त होकर मधुर बोलने वाली होंगी जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि भी अत्यन्त सरल होगी। आपकी एक विशेषता यह रहेगी कि आप अपने विचारों को सुगमतापूर्वक प्रकट करने में सफल रहेंगी तथा दूसरे के विचारों को भी सादगी से ग्रहण करने की क्षमता से पूर्ण रहेंगी। आप सात्विक भोजन की प्रिय होंगी। गुणों की आप ज्ञाता होंगी तथा श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप धन तथा ऐश्वर्य से हमेशा सम्पन्न रहेंगी।

शरीर से आप सुन्दर तथा स्वस्थ रहेंगी। आपकी प्रकृति नैसर्गिकरूप से दानशील रहेगी तथा जीवन में समयानुसार आप इस प्रकृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। इससे आप समाज में प्रतिष्ठा को प्राप्त करेंगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा दिखावे एवं प्रपंचों से हमेशा दूर रहेंगी साथ ही विदुषी के रूप में भी समाज में प्रसिद्ध होंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही हिम्मत से कार्य करने

वाली होंगी तथा आप अपने कार्यों में पूर्ण रूप से निपुण रहेंगी। आप मधुर भोजन प्रिय तथा मधुर पेय की प्रिय होंगी। मीठा खाना तथा पीना दोनों आपको रूचिकर लगेंगे। आप में भय का सदैव अभाव रहेगा तथा निर्भीकता से जीवनार्जन करेंगी। परन्तु कभी-कभी आपकी दुष्ट बुद्धि हो जायेगी जिससे आपका मन दुष्ट कार्यों की ओर भी प्रेरित होगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यो को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से

वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ (2,7,12) दोनों शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की, स्वाती नक्षत्र, परिध योग, चतुष्पाद करण, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अनिष्टकारी रहेगा। अतः आपको चाहिए कि 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों में, स्वाती नक्षत्र, परिध योग, चतुष्पाद करण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण या कय विकय आदि शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में त्याज्य समझें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो शारीरिक या मानसिक व्याकुलता बढ़ रही हो व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या प्रोन्नति में व्यवधान तथा अन्य अशुभ फल घटित हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको श्री गणेश जी के नित्य प्रातः एवं सायं दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही पन्ना, हरितवस्त्र, मिश्री, कर्पूर, घृत, गेहूँ इत्यादि पदार्थों का भी दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा मानसिक शान्ति भी प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं शीं बुधाय नमः।